कहाँ से आते हैं जूते?

अनुपम मिश्र

तुम कह सकते हो यह भी कोई सवाल हुआ? दुकान से आते हैं जूते। पर सवाल यह है कि दुकान में कहाँ से आते हैं?

खैर, अमरीका की एक संस्था नॉर्थवेस्ट वॉच को यह सवाल बहुत भाया। इसलिए उसने जानना चाहा कि सामान्य अमरीकी परिवारों में इस्तेमाल होने वाले जूते कहाँ से आते हैं। इस छोटी-सी जिज्ञासा ने उस संस्था को लगभग पूरी दुनिया का चक्कर लगवा दिया। कैसे.....

चलो, शुरू करते हैं जूते की यात्रा...

मान लो किसी जूते पर अमरीका की सबसे प्रसिद्ध जूता कम्पनी का ठप्पा लगा है। पर यह जूता इसने बनाया नहीं है। इस कम्पनी ने एक बिलकुल अनजानी कम्पनी से करार किया हुआ है। इस अप्रसिद्ध कम्पनी को खोज निकालने में थोड़ा समय लगा। मेहनत बहुत करनी पड़ी क्योंकि दूरी बहुत थी – वे दक्षिण कोरिया जा पहुँचे। इस लम्बी, थकान भरी यात्रा से भी वे खुश ही थे कि चलो अब जूते की कहानी पूरी हुई। पर नहीं।

यह तो शुरुआत थी। दक्षिण कोरिया की यह कम्पनी भी इस जूते को खुद नहीं बनाती है। वह इसे इण्डोनेशिया के जकार्ता शहर की एक गुमनाम कम्पनी से बनवाती है। यह कम्पनी वहाँ के एक औद्योगिक हिस्से में है। इस जगह का नाम है – तांगेरैंग।

मज़ेदार बात यह है कि सारा काम यहाँ भी नहीं होता है। यहाँ की कम्पनी जूते के उच्च तकनीकी डिज़ाइन को अपने कम्प्यूटरों से ताइवान देश की एक और गुमनाम कम्पनी को भेजती है।

इस डिज़ाइन के तीन भाग हैं। पहला है, ऊपरी हिस्सा जो पैर के पँजे को ढँकता है। दूसरा भाग है, पैर के तलुए से चिपककर रहने वाला जूते का सुफतला। तीसरा है, सड़क या पगडण्डी पर चलने वाला निचला तला। अब ये सब कोई मामूली जूते के अंग थोड़े ही हैं। इसलिए इन तीन प्रमुख अंगों के बीस हिस्से और हैं।

इस जूते का मुख्य हिस्सा है – चमड़ा। यह गाय का चमड़ा है। इन गायों को इसी काम के लिए विशेष रूप से अमरीका के टेक्सास में पाला जाता है। यहीं इन्हें आधुनिक तकनीक से बने कत्लखानों में मशीनों से मारा जाता है। फिर बड़ी बारीकी से इनका चमड़ा निकाला जाता है। काटे जाते समय की नरमी खाल में बनाए रखने के लिए उसे न जाने कितनी रासायनिक क्रियाओं से निकाला जाता है। फिर उसे नमक के पानी में उपचारित किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में चमड़े का एक टुकड़ा कोई 750 किस्म के रसायनों से गुज़रता है।

इस तरह तैयार यह चमड़ा बड़ी-बड़ी मालगाड़ियों में लदकर अमरीका के लॉस एंजलीस भेजा जाता है। इस शोधित चमड़े की आगे की यात्रा जल मार्ग से होती है। पानी के जहाज़ों से चमड़े के ये भीमकाय गट्ठर दक्षिण कोरिया देश के पुसान नाम की जगह तक पहुँचते हैं। यहाँ इनकी और बेहतर सफाई होती है।

अमरीका में पर्यावरण को लेकर बड़े सख्त नियम हैं। प्रदूषित पानी को साफ किए बगैर नदी, नालों में नहीं छोड़ा जा सकता है। वहाँ हवा-पानी को साफ बनाए रखने के पर्यावरण-मानक तगड़े हैं। कोई चूक हो जाए तो भारी मुआवज़ा चुकाना पड़ता है। यह काम करने वालों को भारी मेहनताना भी देना पड़ता है। और फिर चमड़े से जुड़े होने के कारण सभी समाजों में इन्हें थोड़ी टेढ़ी और नीची निगाह से देखा जाता है। इन सब परेशानियों से बचने का अमरीकियों को एक तरीका नज़र आया। और वह यह कि अपनी सारी मुसीबतें, गन्दगी एशिया के किसी देश के आँगन में फेंक दो। पानी के जहाज़ का भाड़ा चुकाने के बाद भी यह सब अमरीका में ही करने से सस्ता बैठता है। जूते पर मुनाफा बढ़ गया सो अलग।

चमड़े की कमाई-रंगाई पुसान की फैक्टरियों में होती है। इसके लिए हरेक टुकड़ा 20 चरणों की बेहद खतरनाक रासायनिक क्रियाओं से गुज़ारा जाता है। इस दौरान चमड़े की सारी गन्दगी, कचरा, बाल, ऊपरी परत – सब अन्तिम रूप में अलग हो जाते हैं। यह सब गन्दगी फैक्टरी के पड़ोस में बह रही नाकटोंग नदी में छोड़ दी जाती अब हल्का, बेहद कीमती, शुद्ध चमड़ा हवाई जहाज़ में लदकर जकार्ता पहुँचता है।

चमड़े को यहीं छोड़कर पहले जूते में लगने वाले तले को

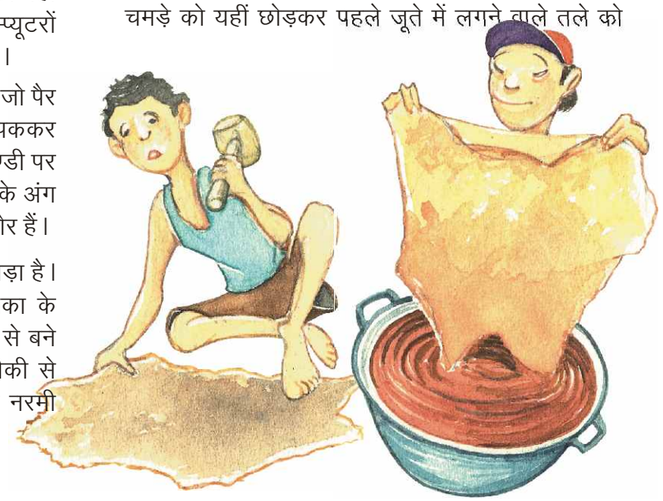

देखते हैं। बीच के तले में फोम का उपयोग होता है। यह खूब हल्का, खूब मज़बूत फोम गर्मी-सर्दी से बचाता है। इसे बनाने में जो पदार्थ लगते हैं उनमें से एक सउदी अरब से निकलने वाले पैट्रोल से बनता है।

अब बारी है बाहरी तले की। इसे स्टाइरीन ब्यूटाडाइन रबर से बनाया जाता है। इसका कुछ भाग सउदी अरब से निकले पैट्रोल से बनता है तो कुछ ताइवान की कोयला खदानों से निकली बेंजीन से। बेंजीन निकालने का कारखाना ताइवान के परमाणु बिजलीघर से मिलने वाली ऊर्जा से चलता है।

जूते का बाहरी तला भी बन गया। अब इसे अलग-अलग आकार-प्रकार के जूतों के हिसाब से डाई से काट-काटकर जूता-जोड़ी बनाना बाकी है। इन्हें बेहद दबाव और गर्मी देने वाले साँचों में ढालकर, काटकर अब तक बन चुके आधे जूते में चिपका दिया जाता है।

कुल मिलाकर पता यह चला कि सभी प्रसिद्ध जूता कम्पनियों के जूते इन्हीं सब जगहों में बनते हैं। सब जूतों में कोई भी अन्तर नहीं रहता। अन्तर है तो बस नामों की चिप्पी का – ब्राण्ड नेम का। इन लगभग एक-से जूतों पर बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ अपने-अपने कीमती ठप्पे लगा देती हैं।

जूते की यह यात्रा अपने पहले कदम से आखिर तक पशुओं को क्रूरता से मारती है, पर्यावरण नष्ट करती है, बनाने वालों का स्वास्थ्य खराब करती है, तो कहीं आसपास की भारी ऊर्जा खा जाती है। जूते के तैयार हो जाने के बाद भी यह यात्रा खत्म नहीं होती।

तैयार जूते को बहुत ही हल्के टिशू पेपर में लपेटना बाकी है। इस विशेष कागज़ को सुमात्रा के वर्षा वनों में उगने वाले कुछ खास पेड़ों को काटकर बनाया जाता है। पहले तो जूते का डिब्बा भी ताज़े गत्ते से बनता था। अब कई जूता कम्पनियों को पर्यावरण बचाने की सुध आ गई है! ये डिब्बे पुराने कागज़ों को रिसाइकल कर बनाए जाते हैं।

एक जूते की इस विचित्र यात्रा में कुल तीन सप्ताह का समय लगता है। अब कोई यह न पूछे कि ऐसे विचित्र ढंग से तैयार होने वाले, पूरी दुनिया का चक्कर काटकर बनने वाले जूतों को पहनकर लोग कितना पैदल चलते हैं?

जूतों का यह किस्सा किसी देश विशेष का नहीं है। जो हाल अमरीका का है, वही कनाडा, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप – सब जगह का है।

यदि हम नहीं सम्भले तो हमारा हाल भी ऐसा ही होने जा रहा है। हमें भी जूते इसी भाव पड़ेंगे।

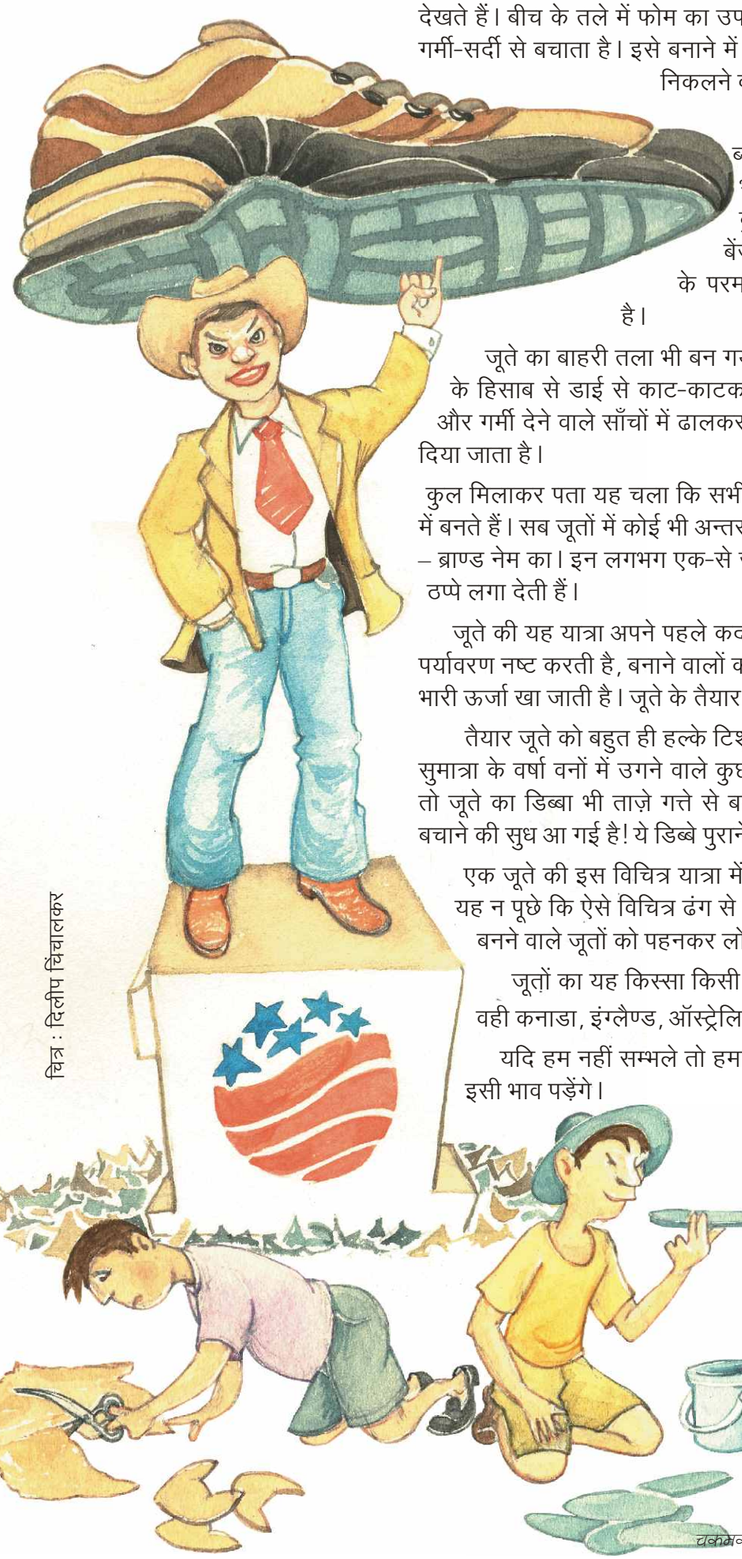

चित्र : दिलीप चिंचालकर